

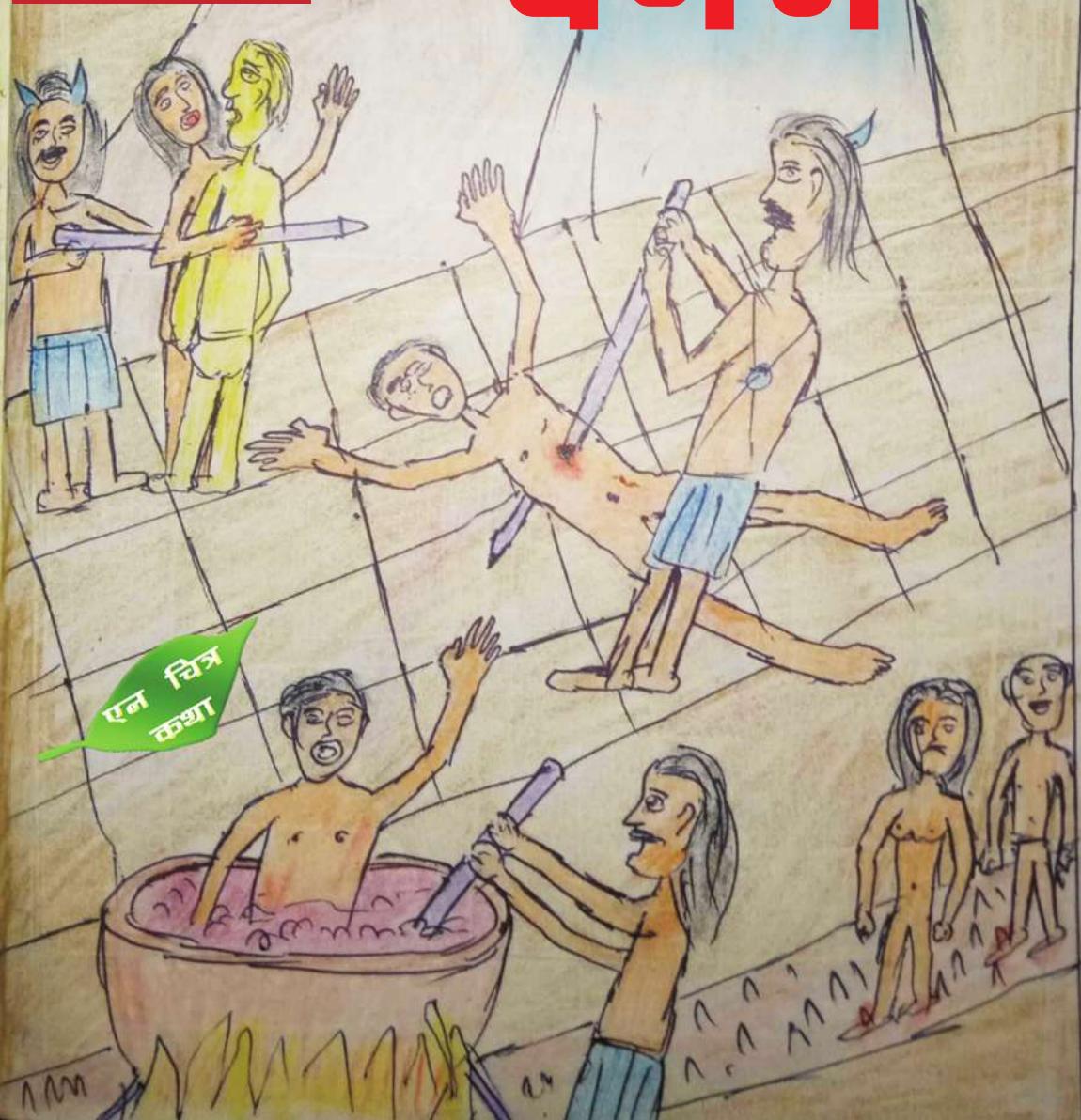


विम कथा



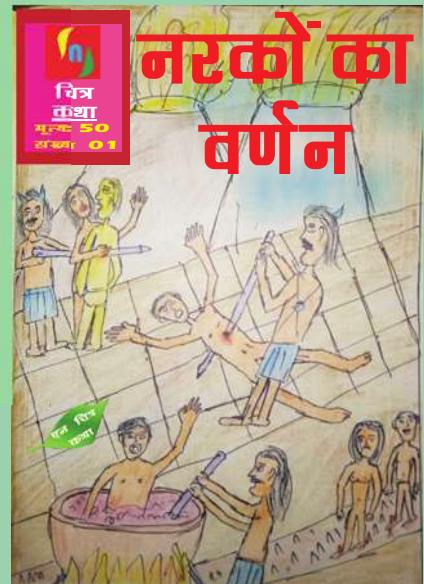
चित्र
कथा
मूल्य: 50
संख्या 01

नरको फा वण्णन



एन चित्रकथा के कॉमिक्स

1. नरकों का वर्णन



इसी सेट के कॉमिक्स

1. डैश बुक (रहस्यमयी कहानी कॉमिक्स मूल्य 30/-)
2. गिलू और (गिलू की कॉमिक्स मूल्य 30/-)
गिनी ब्लैकहोल
3. नरकों का वर्णन (एन चित्र कथा मूल्य 50/-)

आगामी सेट के कॉमिक्स

1. इनफैक्टड (ब्लैकहोल की कॉमिक्स मूल्य 50/-)
2. यूफओ (तेजस की कॉमिक्स मूल्य 50/-)



चित्रकथा रचनाकार युवराज वर्मा

कॉमिक्स रचनाकार और लेखक युवराज वर्मा का जन्म सहारनपुर जिले, उत्तर प्रदेश में हुआ। बचपन से ही इन्हे कॉर्टून और कॉमिक्स का शौक था। जिनसे प्रेरित होकर अपनी मैटिक शिक्षा पूरी करने के बाद कॉमिक्स की रचना करनी शुरू की। अपने अंदर के कल्पनाओं को कागज पर उतार दिया। कॉमिक्स एक ऐसा माध्यम था जिसमें हम अपनी मस्तिष्क के अंदर की रचनाओं को प्रस्तुत कर सकते हैं। इसी रचना को प्रस्तुत किया उन्होंने अपनी एनकॉमिक्स के माध्यम से।

युवराज वर्मा जी ने हमारी आध्यात्मिक कथाओं के संग्रह को पेश किया है एन चित्रकथा के माध्यम से। आज लोग भौतिकता में इतने लीन हो गये हैं और उनके दोजमर्दी की जिदंगी ने उन्हें इतना व्यस्त कर दिया है कि वो ये बात भी सोच नहीं पाते कि इस जीवन ये पटे क्या है? क्या यही जीवन सबकुछ है जबकि सब नश्वर है? ये सब प्रश्नों के उत्तर हमें हमारे शास्त्र देते हैं जिसे प्रस्तुत किया गया है युवराज वर्मा द्वारा कृत एनचित्रकथा के माध्यम से।

॥ धन्यवाद ॥

प्रकाशक

श्रीमद्भागवत

पाचदा स्कंथ



यह चित्रकथा श्रीमद्भागवतम के पांचवे स्कंद
के छब्बीसवें अध्याय पर आधारित है।

एन चित्रकथा की प्रस्तुति

नरकों का वर्णन

युवराज वर्मा द्वादा कृत

एक महान राजा हुए थे महाराज परीक्षित जो अर्जुन के पोते व अभिमन्यु के बेटे थे । एक दिन वे जंगल में शिकार करते हुए थक गये और शमिक ऋषि के आश्रम पहुँचे ।



ऋषि शमिक के पुत्र श्रृंगी को ये पता चला जो उसने राजा परिक्षित को श्राप दे दिया ।



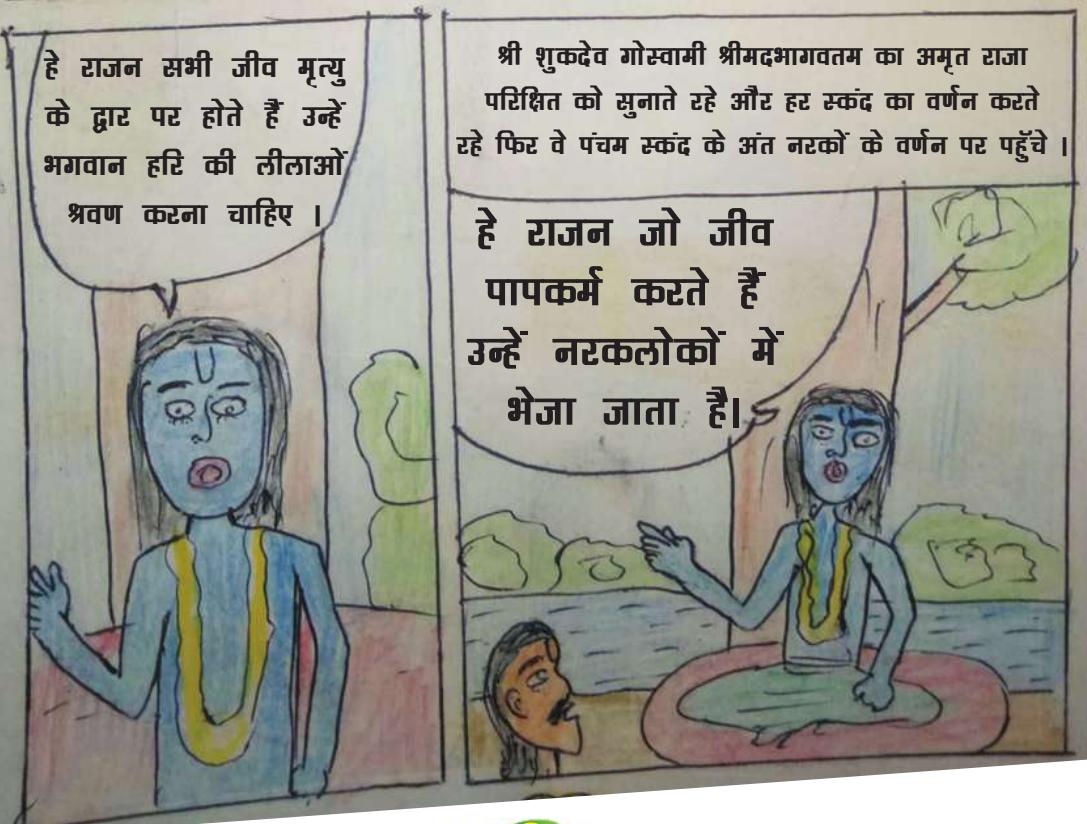
नोट : कमजोर दिलवाले और अंधविश्वासी इस एन चित्रकथा से दूर रहें ।

नरकों का वर्णन

राजा परिषित को जब अपनी मृत्यु की बात पता चली तो अपना सारा राज्य त्यागकर वे श्री वेदव्यास के पुत्र श्री शुकदेव गोस्वामी के पास श्रीमदभागवतम के श्रवण के लिए गये ।



हे राजन सभी जीव मृत्यु के द्वार पर होते हैं उन्हें भगवान हरि की लीलाओं श्रवण करना चाहिए ।

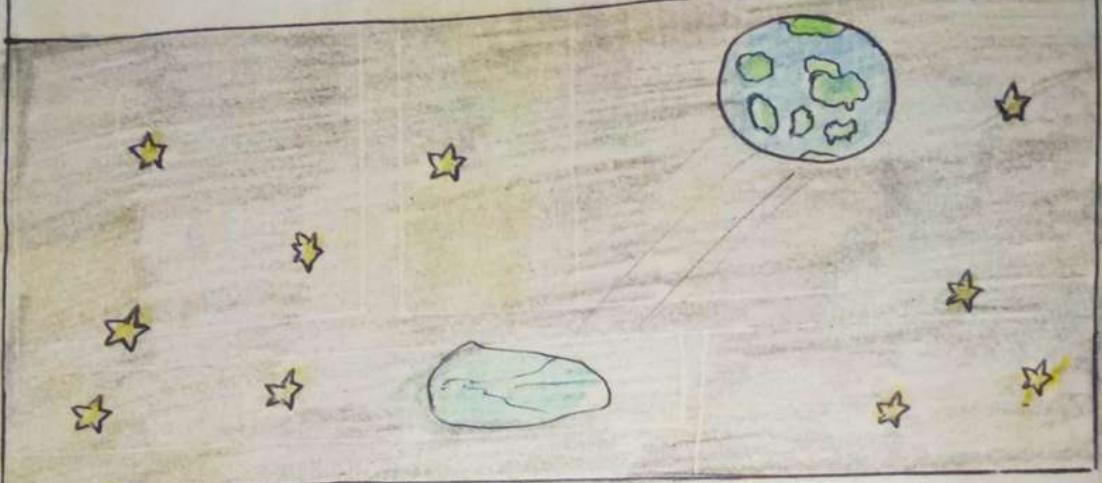


श्री शुकदेव गोस्वामी श्रीमदभागवतम का अमृत राजा परिषित को सुनाते रहे और हर स्कंद का वर्णन करते रहे फिर वे पंचम स्कंद के अंत नरकों के वर्णन पर पहुँचे ।

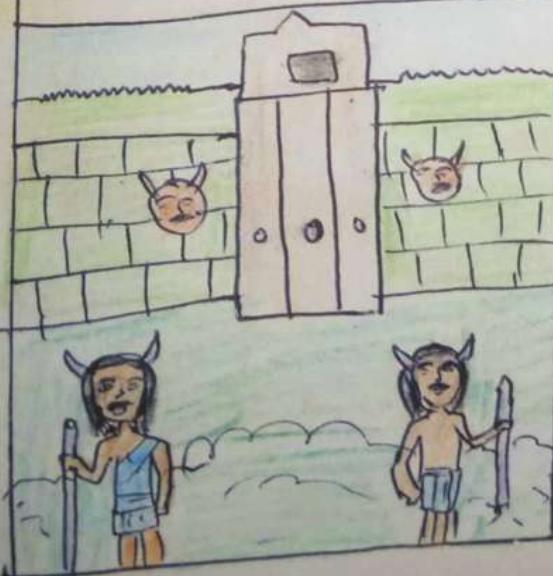
2

एन चित्रकथा

सभी नरकलोक तीनों लोकों तथा गर्भादक सागर के मध्य स्थित है जो पृथ्वी ग्रह से 50100 योजन की दूरी पर है।



यहीं पर स्थित है संयमनी पुरी । इसी जगह पापी जीवों को लाया जाता है।



यहाँ पर
शासन
करते हैं
श्रीयमराज
ये भी
भगवान
के
भक्त
हैं।

1 योजन 8 मील के बराबर है।

गर्भादक सागर में भगवान् श्रीविष्णु श्रीलक्ष्मी के साथ वास करते हैं।

नरकों का वर्णन

जिसने जन्म लिया है उसकी मृत्यु होना भी निश्चित है। मृत्यु के बाद जीव के इस जीवन के कर्म ही उसके साथ जाते हैं।



श्रीयमराज के यमदूत पापी जीव को पाश में बांधकर अपने साथ ले जाते हैं।



पापी जीव को यमदूत तपते हुए कई मीलों का गर्भ रास्ता पर कुछ क्षण में ही तय कराकर यमराज के दरबार में पेश किया जाता है। जहाँ उसका दंड निर्धारित करके नरक में भेजा जाता है।



एन चित्रकथा

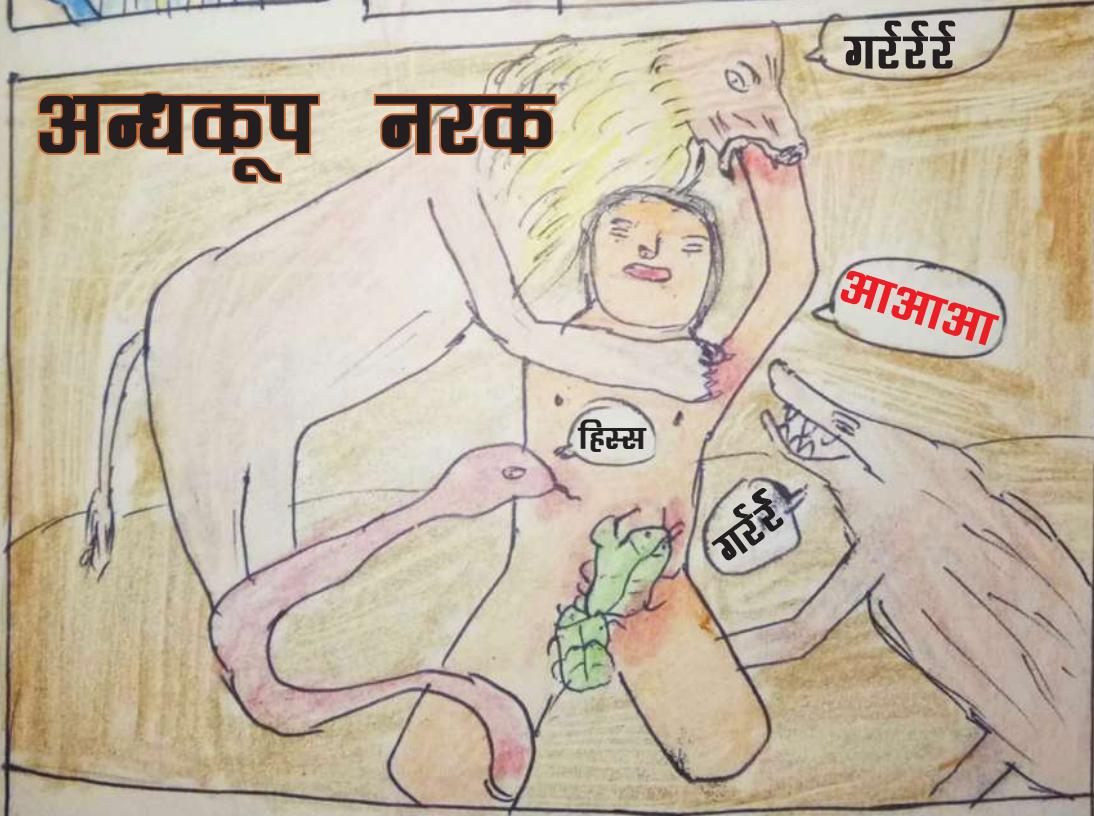
हे राजन अब मैं
विभिन्न नरकों का
वर्णन करूँगा।



निम्न योनि के जीव जैसे पशु, कीट, सर्प आदि जिन्हें ज्ञान नहीं होता कि उनके काटने से मानव को पीड़ा होगी पर मानव को ये ज्ञान होते हुए भी वो इन जीवों को सताता या मारता है तो वो पाप करता है।



अन्यकृप नरक



तो उस जीव को अन्यकृप नरक में दण्डित किया जाता है जहाँ ये निम्न कोटि के जीव उसको सताकर उसकी नींद ह्याम कर देते हैं।

नरकों का वर्णन

हे राजन यहाँ जीव को एक यातना शरीर मिलता है। पृथ्वी पर मानव शरीर को काट दें तो वो तुरंत मर जाएगा पर ये यातना शरीर कटने पर भी नहीं मरता और दर्द देता है दुगने ले भी ज्यादा।



जो जीव केवल अपने स्वाद के लिए निरीह पशुओं व पक्षियों का वध करते वे कुम्भीपाक नरक में जाते हैं।



कुम्भीपाक नरक

इस नरक में जीव को उबलते हुए तेल में भूना जाता है।



एन चित्रकथा

जो निर्दोष पुरुषों या ब्राह्मणों को शारीरिक दण्ड देते हैं।

रिश्वत आ चुकी है मेरे पास उसे जूँठे क्षेत्र में फॅसा देता हूँ।

एक निरपटाध व्यक्ति को बिना वजह जो दण्ड देते हैं और गैरजिम्मेदारी से अपना काम करते हैं।

झूठा कबूल कर तू गुजरिग है।



ऐसे पापी लोग जाते हैं...

सूक्दमुख नरक

ईयायाआआआ

जहाँ यमदूत उन्हें उसी तरह कुचलते हैं जिस प्रकार गन्जे को पेट कर रस निकाला जाता है। वो पापी खूब चीखता और मूर्छित होता जाता है।



नरकों का वर्णन

यदि कोई ब्राह्मण या ब्राह्मणी
मदिरापान करते हैं और क्षत्रिय,
वैश्य या वर धारण करने वाला
भी मदिरा पीता है ।

गट गट



हाहाहाहा
चियर्स

चाट बोतल बोडका
काम में दोज का
चियर्स हाहाहा



ऐसी दृश्यात्मा जिस नरक में जाती है वो है...



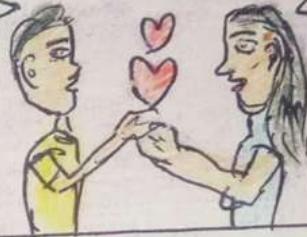
एन चित्रकथा

यदि कोई पुरुष या स्त्री अपनी पत्नी या पति के होते हुए भी अब स्त्री या पुरुष के साथ अवैध लांग करता है।



ऐसी दुष्टामारे जो अपने पति व पत्नी के होते हुए भी अब पुरुष व स्त्री से संभोग की इच्छा करते हैं।

आओ
जानेमन
मजे करें
मुझे अपनी
पत्नी बोट
लगने लगी
है।



हाँ यार
मेरा पति
भी साला
बोटिंग नजर
आता है चलो
मजे करें
होठन में
झग बुक है।

ऐसे पापी जाते हैं.....

तप्तस्युमि नरक

ई-ई-ई-ई
ईयाया



आआआ



यहाँ पुरुष को गर्म लोहे
का स्त्री प्रतिमा से व स्त्री
को गर्म लोहे की पुरुष प्रतिमा
से गले लगाकर उन्हें कोडे से
पीटा जाता है। वो खूब चीखते हैं।

नरकों का वर्णन

ऐसे पराधम जीव जिन्हें
अपनी सम्पत्ति पट गर्व
होता है वो सोचता है
उसके समान कोई धनवान
नहीं उसे भय रहता है कि
उसकी दौलत न लूट जाए
वो इसी चिन्ता में धन
कमाता हुआ जीवन
बिताता है और वो टेढ़ी
नजर रखता है।

ऐसे किसी की हिम्मत नहीं है जो मुझे कुछ
कह दे। अपनी दौलत से नेता, पुलिस और
गुण्डे सब खटीद रखे हैं। मुझसे ज्यादा
दौलतमंद कोई नहीं है। मैं ही सबसे सुखी
और सबसे ताकतवर हूँ।



ऐसे पापी जीव को भेजा जाता है सुचीमुख नरक में। जहाँ
यमदूत उसके शरीर को दर्जियों की तरह धागे से किल देते हैं।



सुचीमुख नरक

एन चित्रकथा

ऐसा व्यक्ति जो केवल अपने परिवार और पत्नी के लिए ही सोचता है और उसका पालन करने के लिए अन्य जीवों के प्रति हिंसा करता है।

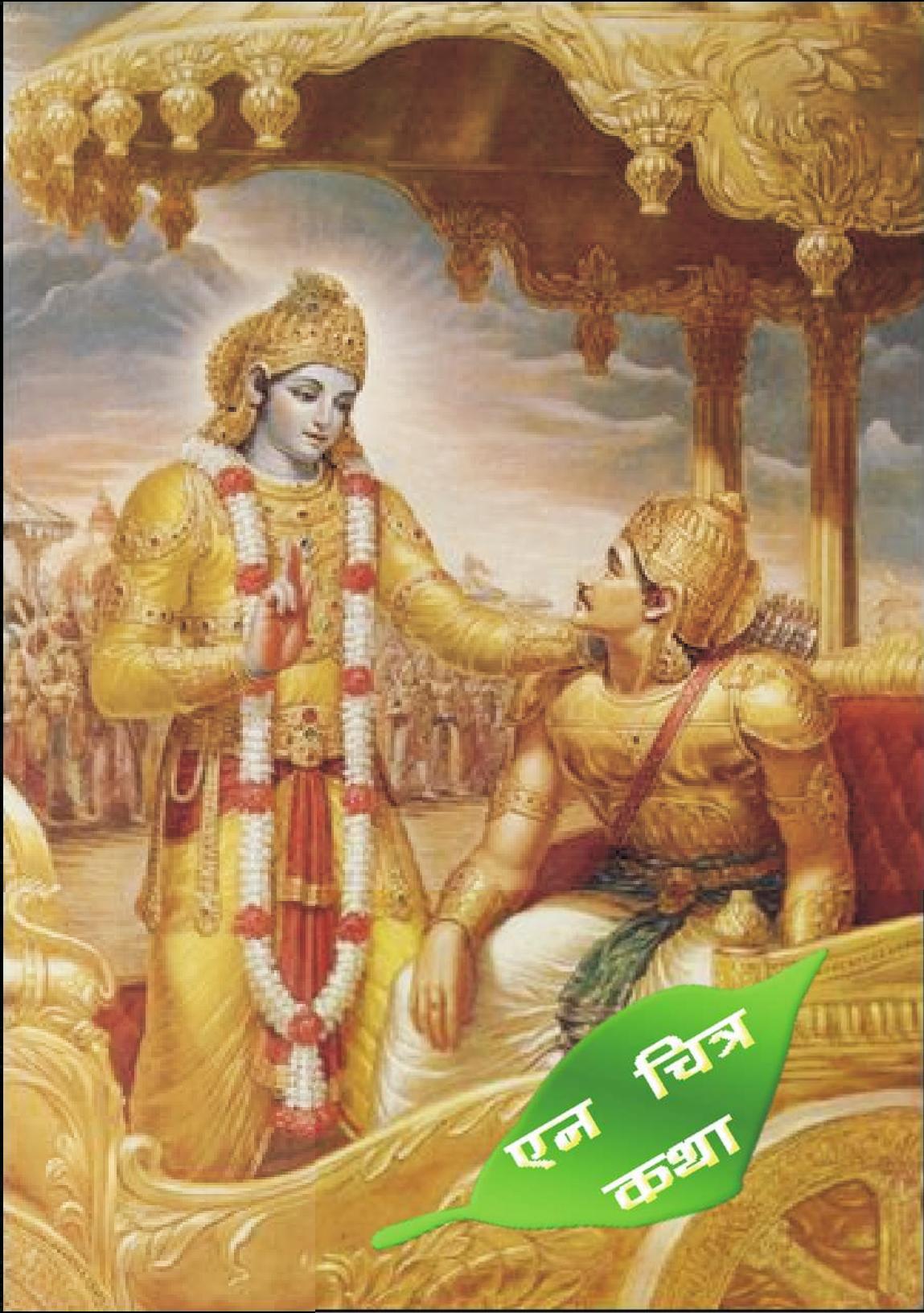


ऐसा नराधम जाता है....



दौरव नरक

वहाँ स्फ़र्स नामक पशु उसके शरीर को काटते हैं और वो खूब तडपता है।



ଏଣ ଚିତ୍ର
କଥା

नरकों का वर्णन

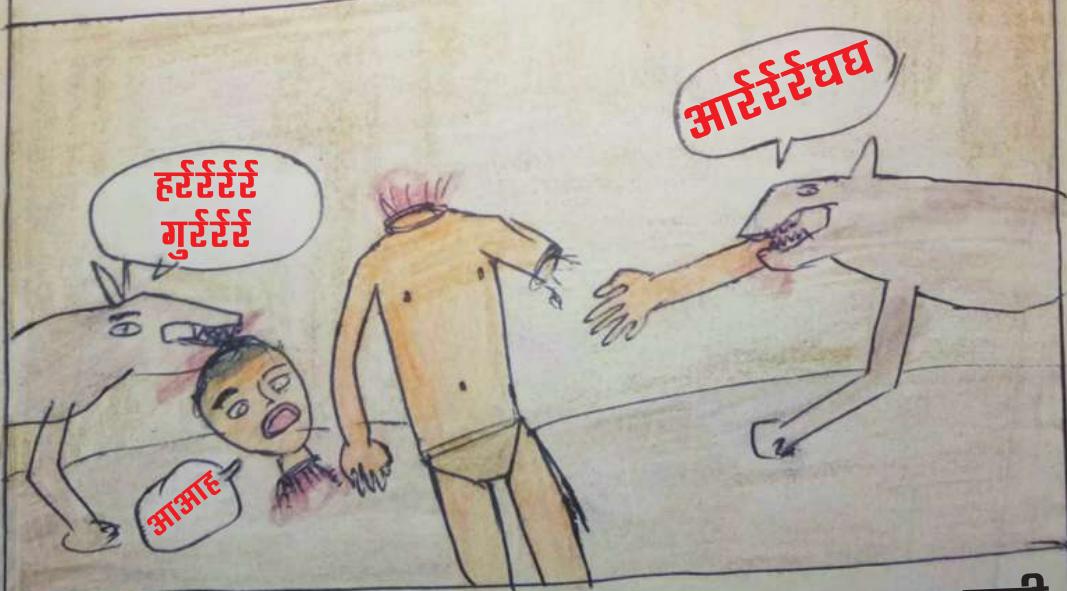
जो व्यक्ति केवल अपने शरीर के पालन के लिए अन्य जीवों को कष्ट देता है और अपने ही स्वार्थ के लिए जीता है।



भाड़ में जाए पूरी
दुनिया मुझे केवल खुद से
मतलब है। बस मैं सुखी रहूँ।

ऐसा पापी दण्डस्वरूप जाता है....

महादौरध नरक



इस नरक में क्रव्याद नामक रूप पशु उस पापी के शरीर को काटते व उसका मौस खाते हैं।

एन चित्रकथा

हे राजन जो पुरुष आपत्तिकाल
न होने पर भी किसी का
सोना तथा रत्न लूटता है।



हाहाहा अच्छा माल
हाथ लगा आज तो
घर में कोई नहीं था
पूरे जेवर और दौलत
पार कर लिए।

ऐसे पापी जाते हैं..

सन्दर्श नरक

इस नरक में यमदूत
उस पापी के शरीर
की चमड़ी को संडसी
और लोहे के गर्म पिंडों
से उतार देते हैं। जिससे
उसका पूरा शरीर खंड
खंड हो जाता है।

तेरी चमड़ी
हमने लूट ली।

इयाया

हाहाहा
दुष्ट कहीं
का।



नरकों का वर्णन

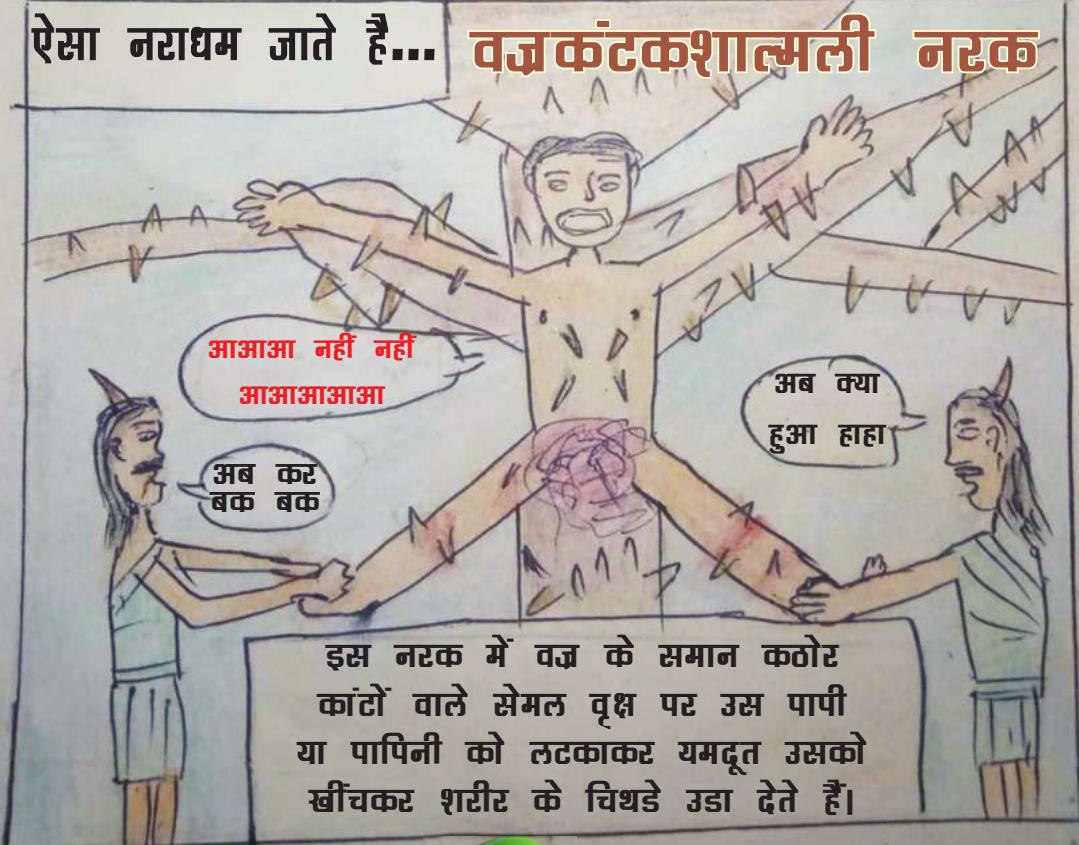


जो पुरुष या स्त्री अन्याधुन्य आपस में यहाँ तक कि पशुओं के साथ भी व्यभिचार करते हैं।

गर्लफैड और बॉयफैड की 24 घंटे बक बक



ऐसा नराधम जाते हैं... **वज्रकंटकशात्मली नरक**



इस नरक में वज्र के समान कठोर कांठों गाले सेमल वृक्ष पर उस पापी या पापिनी को लटकाकर यमदूत उसको खीचकर शरीर के चिथडे उड़ा देते हैं।

एन चित्रकथा

जिस मनुष का जब्ब श्रेष्ठ कुल में हुआ है और फिर भी वो धार्मिक नियमों की अवैहलना करता है और बड़ों का आदर नहीं करता और अधम बन जाता है।



बेटे ये योज योज रात
को लेट आना और उन्हीं
सीधी हरकतें करना ठीक
नहीं है।



क्या बाप तुम यार योज
योज का एक ही बात का
योना दोता है। अब ये
तुम्हारे जैसा टाइम नहीं है
बाप। सब टेंशन क्षिगेट
के धुएं में उड़ाकर भूल
जाने का क्या। मेरी गर्ल
फैंड वेट कर रही है
अपुन चला।

ऐसे अधम जाते हैं....

वैतरणी नरक

इस नरक की नदी हिंसक जीवों
व मलमूत्र, हड्डी, रक्त व मांस से
भरी होती है। इसमें पापी को फेंका
जाता है वो अपने पापों को याद करता
हुआ यातनाएं सहता है।



नरकों का वर्णन

उच्च कुल में जन्मा व्यक्ति कुते, गधे व खच्चर पालता है और जंगल में पशुओं का आखेट करने व उन्हें मारने में खड़ी लेता है।



ऐसे जीव जाते हैं... प्राणरोध नरक



एन चित्रकथा

कुछ लोगों का काम ही
लूटपाट करना है। दूसरों
के घर आग लगाकर, विष
देकर या आयकर न देना
व दूसरों का शोषण करना।



ऐसे असुरों को
भेजा जाता है...

सारमेयादन नरक

यहाँ इन असुरों को सात सौ बीस कुते जिनके दाँत वज्र
के समान कठोर हैं। इन असुरों को भूखडतापूर्वक नोच नोच
कर निगल जाते हैं। ये असुर तडपते रहते हैं।



नरकों का वर्णन

जो गृहस्थ अपने घर आए अतिथियों या अभ्यागतों को बिना कारण कोष भरी कुटिल नजरों से देखता है जैसे उन्हें खा जाएगा ।



ऐसी दुरात्मा को मिलता है.... **पर्यावर्तन नरक**



ऐसे नीच जीवों को इस नरक में वज के समान चोंच वाले गिध, चील, बगुले, कौवे तथा अब्य पक्षी घूरते हैं। और झपटकर तेजी से उसकी आँखें निकाल लेते हैं।

एन चित्रकथा

हे आदरणीय शुकदेव गोस्वामी
पापी जीवों को उनके कर्मों के
हिसाब से दंड देने वाले कितने
नरक हैं?

हे राजन यमलोक में इस
तरह के सैकड़ों हजारों नरक
विद्यमान हैं। मैंने जिन पापी पुरुषों
का वर्णन किया है या जिनका नहीं
किया है वे सब अपने पापों के
अनुसार विभिन्न नरकों में
प्रवेश करेगे।



नरकों का वर्णन



नरक में प्रवेश करने के बाद जब पापी जीव
अपने पापों की यातना भुगत लेते हैं उसके बाद
उन्होंने जिस चेतना में शरीर त्याग था उसके
अनुसार उन्हें अगले जन्म में शरीर दिये जाते हैं।



जो किसी से ईर्ष्या द्वेष
करते हुए शरीर त्यागता है
तो सर्प योनि में जन्म पाता है।

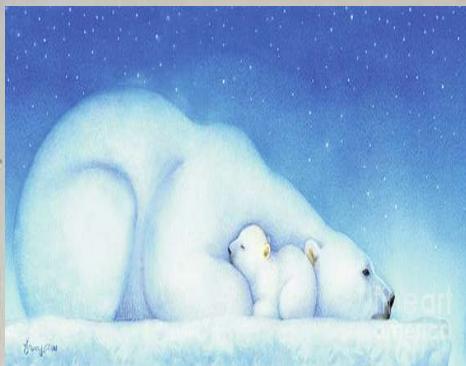


जो बस खाना खाना ही
चाहिए बस खाते रहो वो
सूक्ष्म योनि में जाकर विषा
खाते रहते हैं।

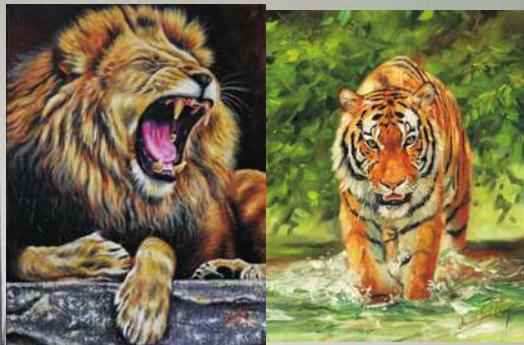
जिसे दूसरों को
तंग करना या
उन्हें लूटना अच्छा
लगता है वो बंदर
की योनि में जन्म
लेता है।



एन चित्रकथा

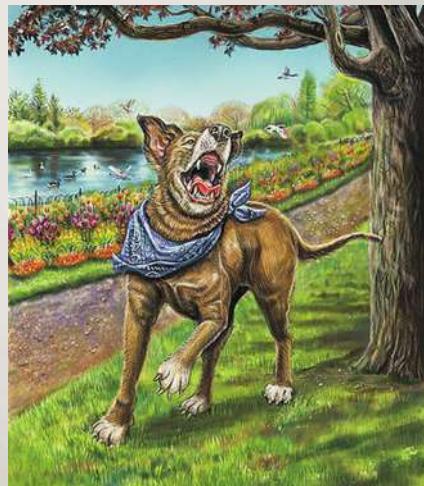
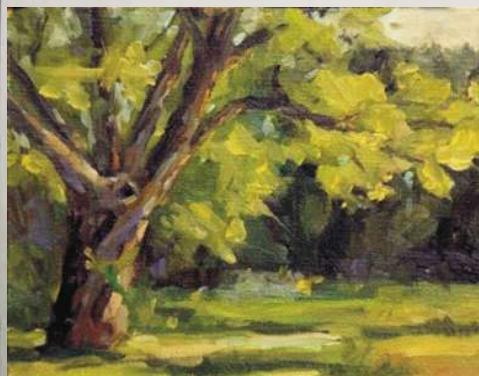


जिन मानवों को केवल सोना
अच्छा लगता है वो भालू की
योनि में जन्म धारण करते हैं।



जो मांस के शौकीन हैं वो
शेर चीते आदि का जन्म पाते हैं।

जिन्हें अंग प्रदर्शन में खड़ि है
वृक्ष बनकर नग्न खड़े रहते हैं।



जो बकवास ही करते रहते हैं
हर वक्त वो कूकर बनकर
भौंकते ही रहते हैं।

नरकों का वर्णन

इस तरह जीव विभिन्न
योनियों में धूमता हुआ
जन्म मृत्यु के चक्र में
धूमता रहता है।

हे भगवन इस भौतिक
जगत में जीव इतना कष्ट
पाता है तो क्या इन
जीवों की इन कष्टों
से मुक्ति का कोई
उपाय नहीं है?

श्रीशुकदेव गोस्वामी इस प्रश्न से खुश हुए।

हे राजा परीक्षित ये प्रश्न पूछकर तुमने मुझे अति
प्रसन्न किया है। नरकों से मुक्ति का उपाय है भक्ति।
मनुष्य को भगवान् कृष्ण में अपने मन को लगाकर¹
उनके नामों का कीर्तन करना चाहिए जिससे उसका
ये जीवन सफल हो जाएगा।

इस तरह से श्रीशुकदेव
गोस्वामी ने महाराज
परीक्षित को नरकों
का वर्णन व उनसे मुक्ति
का उपाय सुनाया और
श्रीमद्भागवतम् की
कथा आगे बढ़ती रही।

ओम नमः भगवते वासुदेवाय ॥

एन चित्रकथा Page No. 1

ओम नमोः भगवते वासुदेवाय,

युवराज वर्मा का नमस्कार पाठक मित्रों तो आज आपने पढ़ी एन चित्रकथा की प्रथम कथा नरकों का वर्णन जो पटम पूजनीय ग्रंथ श्रीमद्भागवतम से ली गई है। एन कॉमिक्स के बाद एन चित्रकथा का प्रस्तुतीकरण हुआ नरकों के वर्णन के साथ। वैसे तो नरकों का वर्णन कुरान, बाइबल आदि ग्रन्थों में भी दिया गया है। क्योंकि धर्म कभी अलग अलग नहीं होते। सभी धर्म हमें ईश्वर की क्षता का ज्ञान कराने और हमारी वास्तविक स्थिति से हमें अवगत कराने का ही कार्य करते हैं। शास्त्र हमारे र्गार्दर्शन के लिए ही होते हैं। इस चित्रकथा में आपने पढ़ा कि पापी जीवों को मृत्यु के बाद उनके बुद्धे कर्मों की कैसी सजा भिनती है। और अब अगली एन चित्रकथा में, जो आध्यात्मिक ब्रह्मांड है, जानेगें आप उस दिव्य जगत के बारे में जहाँ क्षेवत सुख है कोई कष्ट नहीं है। कैसा है वो ब्रह्मांड। रामायण व महाभारत की कहानियाँ तो आपने बहुत पढ़ी हैं पर एन चित्रकथा में आप वो कथाएं पढ़ेंगें जो आपने पहले कभी नहीं सुनी होगी या सुनी हैं तो अचूटे रूप में सुनी होगी। हमारा प्रयोजन किसी के दिल को दुखाना नहीं है। इस एन चित्रकथा में कोई भी पेज हमने अपनी तरफ से कुछ नहीं कहा है जो भी हमारे शास्त्र बता गये हैं वही प्रस्तुत किया है। फिर भी किसी प्रकार की कोई गतती हुई हो तो उसके लिए हम क्षमाप्रार्थी हैं। अब आपसे विदा लेते हैं। अगली एन चित्रकथा तक विदा।

अपनी प्रतिक्रियाओं से हमें अवगत कराते रहें।

धन्यवाद

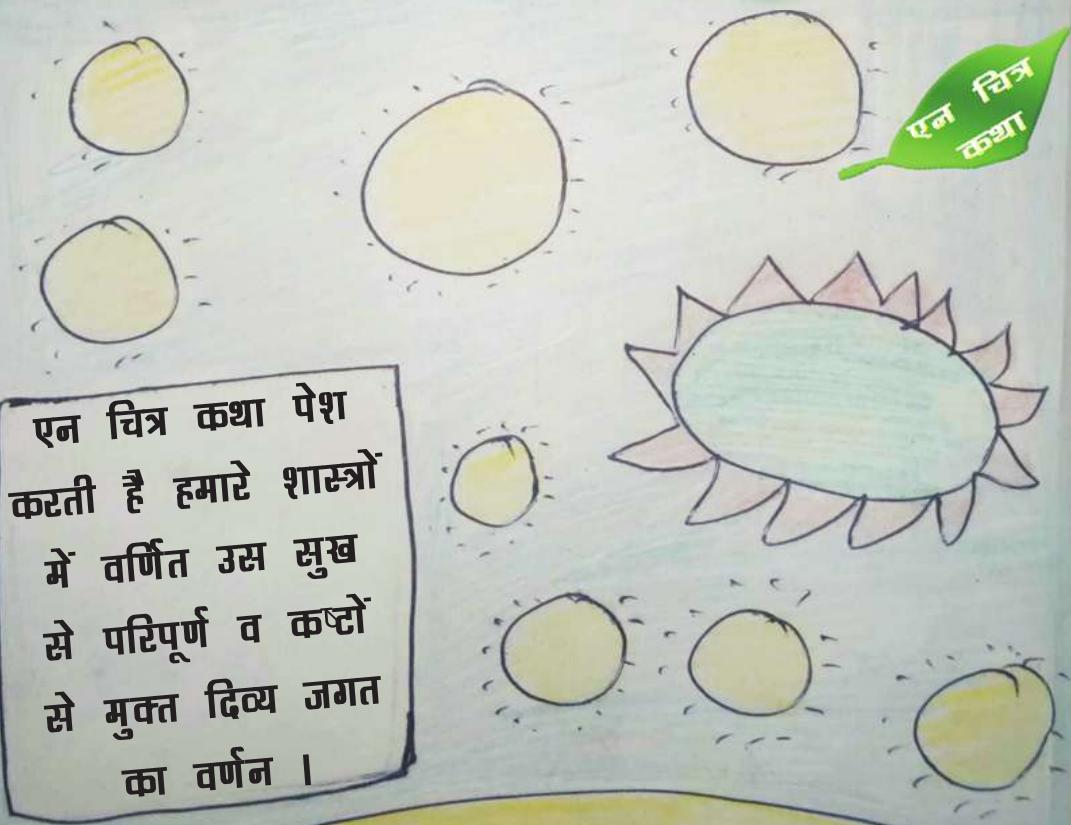
आपका

युवराज वर्मा



हम जिस ब्रह्मांड में रहते हैं वो भौतिक ब्रह्मांड
कहलाता है और यहाँ इतने कष्ट हैं इतने दुख हैं
और ये नश्वर हैं तो एक ऐसा ब्रह्मांड भी होगा जो
अनश्वर है जहाँ सुख ही सुख कोई कष्ट नहीं है तो
कैसा है वो.....

आध्यात्मिक ब्रह्मांड





ହୃଦୟ ଶ୍ରୀ କୃଷ୍ଣ

आपको कात्तिक मास की शुभकामनाएँ

